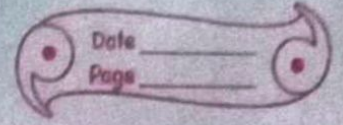


3.

सारवी : (कबीर)



भावार्थ :

पहली सारवी :

ऐसी बाँधी बोलिए, मन का आपा रवोई
अपना तन शीतल, औरन की सुरत होई।

भावार्थ :

प्रस्तुत सारवी में संत कबीरदास
अहंकार और कटु वचन त्यागने
का संदेश देते हुए कहते हैं
कि लोगों को अपने मन का
अहंकार त्यागकर ऐसी मीठे वचन
बोलने चाहिए, जिससे उनका अपना
शरीर शीतल अर्थात् शांत और
प्रशन्न हो जाए और साथ ही
सुनने वाली को भी उससे सुरत
मिले। अतः हमें आपस में
मीठे बोल बोलकर मधुर व्यवहार
करना चाहिए।

दूसरी आश्वी :

कस्तूरी कुंडलि बसै, सुग वूँटै बन मॉ
रोसै घटि - घटि राम है, दुनिया देखे नॉ

भावार्थ :

कबीरदास कहते हैं कि जिस प्रकार
कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ
हिरण की अपनी नाभि में ही
होता है, किंतु वह उसकी
सुगंध महसूस करके उसे पाने
के लिए वन - वन में परेशान
होकर मटकता रहता है, ठीक
उसी प्रकार ईश्वर (राम)
भी सृष्टि के कण - कण में
तथा सभी प्राणियों के
हृदय में निवास करते हैं,
किंतु संसार में रहने वाले लोग
अज्ञानतावश उसे देख नहीं
पाते और परेशान होकर
इधर - उधर दूँटते रहते हैं।
इसीलिए हमें ईश्वर को बाहर
न खोजकर अपने भीतर
ही खोजना चाहिए।

तीसरी सारवी :

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि नाँहि।
सब अंधियारा भिँटि गया, जब दीपक भाँहि।

भावाँही :

कबीरदास कहते हैं कि जिस समय मेरे
अंदर 'मैं' अर्थात् अहंकार भरा
हुआ था, उस समय मुझे ईश्वर
नहीं मिल पा रहे थे। अब जब
मुझे ईश्वर के दर्शन हो गए हैं।
तो मेरे ईश्वर, अहंकार समाप्त
हो गया है। जैसे ही मेरा उस
ज्योत्स्वरूप ज्ञान रूपी दीपक को
मन में देखा, तो मेरा सारा
अज्ञान रूपी अंधकार समाप्त हो
गया तथा मुझे इस सत्य का
दर्शन हो गया है कि अंधकार
ही ईश्वर का शत्रु और घोर
विरोधी है।